[This question paper contains 5 printed pages.]

Your Roll No...............

A

Sr. No. of Question Paper : 3316

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Paper : हिन्दी कविता (रीतिकालीन काव्य) Hindi Kavita (Ritikaleen Kavya)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : II

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. केशव रचित 'रामचंद्रिका' के वन-गमन प्रसंग के भाव-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

नीतिकाव्य परंपरा में रहीम के योगदान का विवेचन कीजिए। (12)

P.T.O.

2. बिहारी के काव्य में अभिव्यक्त भृंगार-भावना का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

बिहारी के काव्य-सौन्दर्य का सोदाहरंण विवेचन कीजिए। (12)

3. घनानंद के काव्य में अभिव्यक्त सौंदर्य-चेतना का विवेचन कीजिए।

अथवा

घनानंद के काव्य में निहित प्रेम के स्वरूप को संपष्ट कीजिए। (12)

4. भूषण की काव्य-भाषा का विवेचन कीजिए।

अथवा

गिरिधर कविराय के काव्य में व्यंजित नैतिक आदर्शों पर प्रकाश डालिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) तुम क्यों चलौ बन आजु। जिन सीस राजत राजु।
जिय जानियै पतिदेव। करि सर्व भाँति सेव।
पति देइ जौं अति दुख्ख। मन मानि लिजै सुख्ख।
सब जक्त जानि अमित्र। पति जानि केवल मित्र।

अथवा

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।
रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँके तीन ।। (8)

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँई परैं, स्थामु हरित-दुति होई।
रनित भृंग-घंटावली, झरित दान मधु-नीरु।
मंद-मंद आवतु चल्यौ, कुंजरु कुञ्ज-समीरु।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं-ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।
एक ही जीवन हुतौ सु तौ बार्‌यौ सुजान संकोच और सोच सहारियै।
रोकी रहै न दुई घनआनंद बावरी रीझ के हाथनि हारियै। (7)

6. दिये गये निर्देशों के आधार पर किन्हीं दो अवतरणों का रचना-कौशल (लगभग 450 शब्दों में) उदघाटित कीजिए :

(क) घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि-पुंज।
जमुना-तीर तमाल-तरु-मिलित मालती-कुंज ।।
उन हरकी हँसी कै, इतें इन सौंपि मुसकाइ।
नैन मिलैं मन मिलि गए दोऊ, मिलबत गाइ ।।

(भाव-सौंदर्य)

(ख) इंद्र जिम जंभ पर बाड़े व ज्यौं अंभ पर, रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर, ज्यौं सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम-अंस पर, कान्ह जिम कंस पर, यौं मलेच्छ-बंस पर सेर सिवराज है।

(शिल्प-सौंदर्य)

(ग) साईं बैर न कीजिए, गुरु, पंडित, कवि, यार
बेटा, बनिता, पँवरिया, यज्ञ करावन हार
यज्ञ करावन हार, राजमंत्री जो होई
विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई
कह गिरिधर कविराय, युगन ते यह चलि आई
इन तेरह सों तरह दिए, बनि आवै साईं ।।

(नीति-सौंदर्य)

(घ) पहले अपनाय सुजान सनेह सों क्यों फिरि नेह कै तोरियै जू।
निरधार अधार है धार-मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनंद आपने चातिक कों गुन-बांधिलैं मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास में यौं बिष घोरियै जू ।।

(रस-व्यंजना)

(6+6=12)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3294 **A**

Unique Paper Code : 12051401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra (भारतीय काव्यशास्त्र)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (LOCF)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का संक्षिप्त परिचय देते हुए आचार्य विश्वनाथ के योगदान पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

काव्य हेतु से क्या तात्पर्य है ? भारतीय आचार्यों द्वारा प्रस्तुत काव्य हेतुओं पर विचार कीजिए । (12)

P.T.O.

2. रस का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

अथवा

शब्द शक्ति किसे कहते हैं ? लक्षणा शब्द शक्ति की परिभाषा देते हुए उसके भेदों का उदाहरण सहित निरूपण कीजिए। (12)

3. महाकाव्य **अथवा** खंडकाव्य का तात्विक विवेचन कीजिए।

4. (क) क्रिन्हीं **तीन** अलंकारों के लक्षण - उदाहरण दीजिए - (3×3=9)

अनुप्रास, विभावना, श्लेष, यमक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास

(ख) किन्हीं **तीन** छंदों के लक्षण - उदाहरण दीजिए - (3×3=9)

भुजंगप्रयात, शार्दूलविक्रीड़ित, चौपाई, रोला, दोहा, छप्पय

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (7×3=21)

(क) ओज गुण

(ख) करुण रस

(ग) रूपक और उपमा में अंतर

(घ) मम्मट के अनुसार काव्य लक्षण

(ङ) काव्य दोष के पाँच प्रकार

[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3461 **A**

Unique Paper Code : 12051402

Name of the Paper : हिन्दी कविता (छायावाद के बाद)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. सप्रसंग व्याखवया कीजिए : (7.5×2=15)

(क) अगर मैं तुमको

ललाती सांझ के नभ की अकेली तारिका

अब नहीं कहता,

या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कुँई,

टटकी कली चंपे की,

P.T.O.

वगैरह, तो

नहीं, कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है

या कि मेरा प्यार मैला है।

बल्कि केवल यही : ये उपमान मैले हो गए हैं।

देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच।

अथवा

क्या अन्तरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें

क्या दीमकों ने खा लिया है

सारी रंग बिरंगी किताबों को

क्या काले पहाड़ के नीचे रब गए हैं सारे खिलौने

क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं

सारे मदरसों की इमारतें

(ख) आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,

शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,

हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,

हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

अथवा

एक आदमी

रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ- -

'यह तीसरा आदमी कौन है?'

मेरे देश की संसद मौन है।

2. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **दो** का रचना-कौशल की दृष्टि से विश्लेषण कीजिए : (7.5×2=15)

(क) कौन है वह व्यक्ति जिसको चाहिए न समाज?

कौन है वह एक जिसको नहीं पड़ता दूसरे से काज?

चाहिए किसको नहीं सहयोग?

चाहिए किसको नहीं सहवास?

कौन चाहेगा कि उसका शून्य में टकराय यह उच्छ्वास?

हो गया हूँ मैं नहीं पाषाण

जिसको डाल दे कोई कहीं भी

करेगा वह कभी कुछ न विरोध। **(मूल–संवेदना)**

(ख) जब वह बहुत ज्यादा थक जाती है

तो उठा लेती है सुई और तागा

मैंने देखा है कि जब सब सो जाते हैं

तो सुई चलाने वाले उसके हाथ

देर रात तक

समय को धीरे-धीरे सिलते हैं

जैसे वह मेरा फटा हुआ कुर्ता हो

(काव्य–सौंदर्य)

(ग) राष्ट्रगीत में भला कौन वह

भारत-भाग्य-विधाता है

फटा सुथन्ना पहने जिसका

गुन हरचरना गाता है।

मखमल टमटम बल्लम तुरही

पगड़ी छत्र चवंर के साथ

तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर

जय-जय कौन कराता है। **(काव्य–बिंब)**

3. नागार्जुन की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

अज्ञेय की कविता का मूत्र स्वर स्पष्ट कीजिए।

4. 'रामदास' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

राजेश जोशी की कविताओं में व्यक्त स्वप्न और यथार्थ का चित्रण कीजिए।

5. भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 1330 **F**

Unique Paper Code : 2052101202

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadhunik Kal)

Name of the Course : B.A.(Hons.) Hindi – DSC-5

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. नवजागरण के आलोक में भारतेंदु युगीन साहित्य का विश्लेषण कीजिए । (18)

अथवा

खड़ी बोली आन्दोलन के संदर्भ में महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान पर प्रकाश डालिए ।

2. हिंदी आलोचना की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

हिंदी निबंध की विकास यात्रा को रेखांकित कीजिए।

3. छायावादी कविता की मुख्य प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए। (18)

अथवा

प्रगतिवादी काव्य-रचना के परिवेश का विश्लेषण कीजिए।

4. दलित शब्द की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए दलित चेतना के उदय और विकास को रेखांकित कीजिए। (18)

अथवा

समकालीन कथा-साहित्य पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिपण्णी लिखिए :- (9 + 9=18)

(क) मध्यकालीन बोध

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन और हिंदी साहित्य

(ग) संस्मरण

(घ) साठोत्तरी कविता

(ड.) साहित्यिक पत्रकारिता

(4000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3499 **A**

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिंदी उपन्यास

Name of the Course : **B.A. (H) – Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(क) "हमारे शिक्षालयों में नरमी को घुसने ही नहीं दिया जाता । वहां स्थाई रूप से मार्शल-लॉ का व्यवहार होता है । कचहरी में पैसे का राज है, हमारे स्कूलों में भी पैसे का राज है, उससे कहीं कठोर, कहीं निर्दय देर में आइए तो जुर्माना; ना आइए तो जुर्माना; सबक ना याद हो तो जुर्माना; किताबें न खरीद सकिए

P.T.O.

तो जुर्माना; कोई अपराध हो जाए तो जुर्माना; शिक्षालय क्या है, जुर्मानालय है । यही हमारी पश्चिमी शिक्षा का आदर्श है, जिसकी तारीफों के पुल बाँधे जाते हैं । यदि ऐसे शिक्षालयों से पैसे पर जान देनेवाले, पैसे के लिए गरीबों का गला काटने वाले, पैसे के लिए अपनी आत्मा को बेच देनेवाले छात्र निकलते हैं, तो आश्चर्य क्या है ?"

अथवा

नौ बजे कथा आरंभ हुई । यह देवी-देवताओं और अवतारों की कथा न थी । ब्रह्म-ऋषियों के तप और तेज का वृतांत न था, क्षत्रियों के शौर्य और दान की गाथा न थी । यह उस पुरुष का पावन चरित्र था जिसके यहां मन और कर्म की शुद्धता ही धर्म का मूल तत्व है । वही ऊंचा है, जिसका मन शुद्ध है; वही नीचा है, जिसका मन अशुद्ध है- जिसने वर्ण का स्वांग रचकर समाज के एक अंग को मदान्ध और दूसरे को म्लेच्छ नहीं बनाया ? किसी के लिए उन्नति या उद्धार का द्वार नहीं बंद किया- एक के माथे पर बड़प्पन का तिलक और दूसरे के माथे पर नीचता का कलंक नहीं लगाया । इस चरित्र में आत्मोनन्नति का एक सजीव संदेश था, जिसे सुनकर दर्शकों को ऐसा प्रतीत होता था, मानो उनकी आत्मा के बंधन खुल गए हैं, संसार पवित्र और सुंदर हो गया है ।

(ख) संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है! प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मनःप्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है-प्रत्येक व्यक्ति इस संसार के रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है । अपनी मनःप्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को वह दोहराता है-यही मनुष्य का जीवन है । जो कुछ मनुष्य करता है, वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है और स्वभाव प्राकृतिक है । मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है- विवश है । कर्ता नहीं है, वह केवल साधन है । फिर पुण्य और पाप कैसा ?

अथवा

साथ रहने की यंत्रणा भी बड़ी विकट थी और अलगाव का त्रास भी । अलग रहकर भी वह ठंडा युद्ध कुछ समय तक जारी ही नहीं रहा, बल्कि अनजाने ही अपनी जीत की संभावनाओं को एक नया संबल मिल गया था कि अलग रहकर ही शायद सही तरीके से महसूस होगा कि सामनेवाले को खोकर क्या कुछ अमूल्य खो दिया है । और वकील चाचा की हर खबर, हर बात इन संभावनाओं को बनाती-बिगड़ती रही थी ।

सामने वाले को पराजित करने के लिए जैसा सायास और सन्नद्ध जीवन उसे जीना पड़ा उसने उसे खुद ही पराजित कर दिया । सामनेवाला व्यक्ति तो पता नहीं कब परिदृश्य से हट भी गया और वह आज तक उसी मुद्रा में, उसी स्थिति में खड़ी है- सांस रोके, दम साधे, घुटी-घुटी और कृत्रिम!

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखिए :

(क) यशपाल

(ख) श्रीलाल शुक्ल

(ग) मन्नू भंडारी

(घ) मैत्रेयी पुष्पा (7.5×2=5)

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित कथाओं का तामा-बाना है। इस कथन के आलोक में अपने विचार व्यक्त कीजिए। (15)

अथवा

'कल की सुखदा और आज की सुखदा में कितना अंतर हो गया है। भोग-विलास पर प्राण देने वाली रमणी आज सेवा और दया की मूर्ति बनी हुई है।' इस कथन के आधार पर सुखदा का चरित्रांकन उदाहरण सहित कीजिए।

4. 'चित्रलेखा' उपन्यास के कथ्य-शिल्प पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'चित्रलेखा' उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

5. 'आपका बंटी' उपन्यास नारी मन की अनेक परतों को खोलता है। स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास की भाषा-शैली पर विचार कीजिए।

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3009 **A**

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **BA (H) Hindi – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए :- (10+10+10)

(क) नीति-शास्त्र और साहित्य-शास्त्र का लक्ष्य एक ही है, केवल उपदेश की विधि में अंतर है। नीति-शास्त्र तर्कों और उपदेशों के द्वारा बुद्धि और मन पर प्रभाव डालने का यत्न करता है, साहित्य ने अपने लिए मानसिक अवस्थाओं और भावों का क्षेत्र चुन लिया है। हम जीवन में जो कुछ देखते हैं, या जो कुछ हम पर गुजरती है, वही अनुभव और वही चोटें कल्पना में

P.T.O.

पहुँचकर साहित्य-सृजन की प्रेरणा देती हैं। कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊँचे दर्जे की होती है। जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति जागृत न हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है। वह साहित्य कहाने का अधिकारी नहीं। पुराने जमाने में समाज की लगाम मजहब के हाथ में थी। मनुष्य की आध्यात्मिक और नैतिक सभ्यता का आधार धार्मिक आदेश था और वह भय या प्रलोभन से काम लेता था। पुण्य-पाप के मसले उसके साधन थे। अब साहित्य ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया है और उसका साधन सौंदर्य-प्रेम है। वह मनुष्य में इसी सौंदर्य-प्रेम को जगाने का यत्न करता है।

अथवा

वर्तमान युग की ऐसी प्रवृत्ति है। जब मानसिक बंधनों की बाधा घातक समझ पड़ती है और इन बंधनों को कृत्रिम और अवास्तविक माना जाने लगता है। यथार्थवाद क्षुद्रों का ही नहीं, अपितु महानों का भी है। वस्तुतः यथार्थवाद का मूल भाव है- वेदना। जब सामूहिक चेतना छिन्न-भिन्न होकर पीड़ित होने लगती है, तब वेदना की विवृत्ति आवश्यक हो जाती है। कुछ लोग कहते हैं- साहित्यकार को आदर्शवादी होना चाहिए और सिद्धांत से ही

आदर्शवादी धार्मिक प्रवचन कर्ता बन जाता है। वह समाज को कैसा होना चाहिए, यही आदेश करता है। और यथार्थवादी सिद्धांत से ही इतिहासकार से अधिक कुछ नहीं ठहरता, क्योंकि यथार्थवाद इतिहास की संपत्ति है। वह चित्रित करता है कि समाज कैसा है या था, किन्तु साहित्यकार न तो इतिहासकर्ता है और न धर्म शास्त्र प्रणेता। इन दोनों के कर्तव्य स्वतंत्र हैं। साहित्य इन दोनों की कमी को पूरा करने का काम करता है। साहित्य, समय की वास्तविक स्थिति क्या है, इसको दिखाते हुए भी उसमें आदर्शवाद का सामंजस्य स्थिर करता है। दुःख-दग्ध जगत और आनंदपूर्ण स्वर्ग का एकीकरण साहित्य है, इसलिए असत्य अघटित घटना पर कल्पना को वाणी महत्वपूर्ण स्थान देती है, जो निजी सौंदर्य के कारण सत्य-पद पर प्रतिष्ठित होती है। उसमें विश्वमंगल की भावना ओत-प्रोत रहती है।

(ख) तुलसी के राम उनकी आशाओं के केंद्र ही नहीं हैं, मनुष्यों में वह जिन तमाम नैतिक गुणों को प्यार करते थे, वह उनके प्रतीक भी थे। ब्राह्मण में वह भले ही निर्गुण निर्विकार हों, मानव रूप में वह किसी देश-काल की सीमाओं में गतिशील समाज के मानव का ही गतिशील प्रतिबिंब हो सकते हैं। तुलसी के राम भारतीय जनता के नैतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चरित्र में पितृ भक्ति, भातृ प्रेम आदि पर बार-बार लिखा गया है, लेकिन तुलसीदास का लक्ष्य परिवार में पिता के अधिकार की

रक्षा करना न था। राम की मानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई, निषाद सभी के लिए है। विशेषता यह है कि जो जितना त्यागी है, निःस्वार्थ है और दलित है, राम का प्रेम उसके लिए उतना ही अधिक है। भरत और निषाद पर उनका प्रेम इसी कारण है। यह प्रेम पारिवारिक संबंधों पर ही निर्भर नहीं है, उसका आधार व्यापक सामाजिक संबंध हैं। समाज में चाहे दुखी-दीनों और निःस्वार्थ सेवकों को कोई न पूछे, राम उन्हें पूछने वाले हैं। तुलसी के राम न्याय-अन्याय के संघर्ष में तटस्थ नहीं हैं। वह न्याय का सक्रिय पक्ष लेते हैं। लक्ष्मण के मुकाबले वह ज्यादा धैर्य दिखाते हैं, लेकिन उनके धैर्य की एक सीमा है। सीमा पार होने पर वह शस्त्र उठाने में जरा भी आगा-पीछा नहीं करते। यह गुण हमारी जनता का विशेष गुण है। वह बड़ी सहनशील है लेकिन एक सीमा तक ही।

अथवा

प्रयोग का हमारा कोई वाद नहीं है, इसको और भी स्पष्ट करने के लिए एक बात हम और कहें। प्रयोग निरंतर होते आये हैं और प्रयोगों के द्वारा ही कविता या कोई भी कला, कोई भी रचनात्मक कार्य, आगे बढ़ सका है। जो कहता है कि मैंने जीवन-भर कोई प्रयोग नहीं किया, वह वास्तव में यही कहता है कि मैंने जीवन भर कोई रचनात्मक कार्य करना नहीं चाहा;

ऐसा व्यक्ति अगर सच कहता है तो यही पाया जायेगा कि उसकी 'कविता' कविता नहीं है; उसमें रचनात्मकता नहीं है, वह कला नहीं शिल्प है, हस्तलाघव है। जो उसी को कविता मानना चाहते हैं, उनसे हमारा झगड़ा नहीं है। झगड़ा हो ही नहीं सकता। क्योंकि हमारी भाषाएं भिन्न हैं, और झगड़े के लिए भी साधारणीकरण अनिवार्य है। लेकिन इस आग्रह पर स्थिर रहते हुए भी हमें यह भी कहना चाहिए कि केवल प्रयोगशीलता ही किसी रचना को काव्य नहीं बना देती। हमारे प्रयोग का पाठक या सहृदय के लिए कोई महत्त्व नहीं है, महत्त्व उस सत्य का है जो प्रयोग द्वारा हमें प्राप्त हो। 'हमने सैकड़ों प्रयोग किये हैं' यह दावा लेकर हम पाठक के सामने नहीं जा सकते, जब तक हम यह न कह सकते हों कि 'देखिए हमने प्रयोग द्वारा यह पाया है।' प्रयोगों का महत्त्व कर्ता के लिए चाहे जितना हो, व सत्य की खोज की लगन उसमें चाहे जितनी उत्कट हो; सहृदय के निकट वह सब अप्रासंगिक है।

(ग) अभिव्यक्ति का संघर्ष दीर्घ होता है। कला का यह तीसरा क्षण दीर्घ होता है। उस संघर्ष में अभिव्यक्ति के स्तर पर आते-आते, हमारे मनोमय तत्त्व-रूप बदलने लगते हैं। होता यह है कि उस संघर्ष के दौरान में भाषा के भीतर अवस्थित ज्ञान-परंपरा और भाव-परंपरा के कारण, जो पहले से ही शब्द-संयोग बने हुए

हैं, उन शब्द संयोगों के साथ अनिवार्य रूप से जुड़े जो अर्थानुषंगों हैं, उन अर्थानुषंगों के प्रभाव में आकर, समशील-समरूप अर्थानुषंगो को आत्मसात कर, मनोमय रूप- तत्त्व अपने को और पुष्ट करते हैं। फलतः वे इस हद तक बदले हैं। जब वे अपने खास साइज और अपनी खास काट की अभिव्यक्ति पा लेते हैं, तब उनके तत्त्व और रूप पहले से बहुत कुछ बदले हुए होते हैं। सामाजिक सम्पदा होने के कारण भाषा मनोनय रूप-तत्त्वों को उनके प्रकट होने के दौरान घटा-बढ़ा देती है और अनजाने ढंग से उनमें नए रूप-तत्त्व ला देती है। साथ ही यह अभिव्यक्ति-संघर्ष भाषा को कुछ बदल देता है, उसे नवीन शब्द-संयोग, नवीन अर्थवत्ता और नयी भंगिमाएँ और व्यंजनाएँ देता है। प्रकार कलाकार भाषा का भी निर्माण करता है। अभिव्यक्ति समाप्त होते ही, उसके संघर्ष का अंत होते ही, कला का तीसरा क्षण भी समाप्त होता है।

अथवा

लेकिन कहानी में मैं जब सार्थकता की बात कहता हूँ तो इसका यह अर्थ है कि कहानी हमारे जीवन की छोटी से छोटी घटना में भी अर्थ खोज लेती है या उसे अर्थ प्रदान कर देती है। इस युग में जब कि 'निरर्थकता' की भावना व्यापक रूप से फैली हुई है और एक वर्ग के लोगों द्वारा फैलाई भी जा रही है, कहानी

जैसे छोटे गद्य-रूप से सबसे पहले सार्थकता की मांग की जा सकती है। यह नहीं है कि छोटी-छोटी बातें ही अर्थहीन प्रतीत होती हों कुछ लोगों को अपना सारा जीवन ही अर्थहीन मालूम होता है और कुछ को तो दुनिया का सारा कारोबार भी व्यर्थ लगता है। परन्तु लघुता में निरर्थकता का खतरा सबसे अधिक है। कहानी की सृष्टि इसी लघुता को सार्थकता प्रदान करने के लिए हुई थी। लोगों की यह धारणा है कि कहानी जीवन के एक टुकड़े को लेकर चलती है, इसलिए उसमें कोई बड़ी बात कही ही नहीं जा सकती। कहानी जीवन के टुकड़ों में निहित 'अन्तर्विरोध', 'द्वंद्व', 'संक्रान्ति' अथवा क्राइसिस को पकड़ने की कोशिश करती है और ठीक ढंग से पकड़ में आ जाने पर यह खंडगत अन्तर्विरोध की वृहद् अन्तर्विरोध के किसी न किसी पहलू का आभास दे जाता है।

2. नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में भारतेन्दु युगीन हिंदी आलोचना पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

स्वतंत्रता पूर्व हिंदी आलोचना के विकास पर प्रकाश डालिए।

3. 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' के आधार पर आचार्य रामचंद्र

शुक्ल की आलोचना की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'दूसरा सप्तक की भूमिका' में निहित अज्ञेय के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

4. हिंदी आलोचना के विकास में नामवर सिंह के योगदान का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

'रेणु : समग्र मानवीय दृष्टि' पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 4097 **A**

Unique Paper Code : 62051412

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (Hindi-B)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Functional Hindi**

Semester : IV (CBCS)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. हिंदी गद्य की विकास-यात्रा पर लेख लिखिए । (12)

अथवा

नाटक के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डालिए ।

P.T.O.

2. 'उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'गुंडा' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए।

3. 'मेले का ऊँट' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'भोलाराम का जीव' पाठ का सार लिखिए।

4. 'अंधेर नगरी' के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'बिबिया' की समीक्षा कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10,10)

(क) बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढ़ी काकी में जिह्वा-स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का, रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही। समस्त इन्द्रियाँ, नेत्र हाथ और पैर जवाब दे चुके थे। पृथ्वी पर पड़ी रहतीं और घर वाले कोई बात उनकी

इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का समय टल जाता या उसका परिमाण पूर्ण न होता अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और न मिलती तो वे रोने लगती थीं। उनका रोना-सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़-फाड़कर रोती थीं।

अथवा

आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ चीज भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनीतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ा कर बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद खराबी करने के लिए नहीं उड़ा दिया?।

(ख) कर्म मार्ग में फंसकर लोग अनेक देवी देवों को पूजते हैं, किंतु बुद्धि का यह प्रकृत धर्म है कि यह ज्यों-ज्यों समुज्जवल होती है अपने विषय मात्रा को उज्ज्वल करती जाती है। थोड़ी बुद्धि बढ़ने से ही यह विचार चित्त में उत्पन्न होता है कि इतने देवी देव इस अनंत सृष्टि के नियामक नहीं हो सकते, इनका कर्ता स्वतंत्र कोई विशेष शक्तिसंपन्न ईश्वर है।

अथवा

हार-जीत की वस्तुएँ भी विचित्र होती थीं। कपड़ा, जूता, रुपया-पैसा, बर्तन आदि में से जो हाथ में आया, वही दाँव पर रख दिया जाता था। कोई किसी की घरवाली की हँसुली जीत लेता और कोई किसी की पतोहू के झुमके। कोई अपनी बहन की पहुँची हार जाता था और कोई नातिन के कड़े। सारांश यह कि जुए के पहले चोरी-डकैती की आवश्यकता भी पड़ जाती थी।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) रेखाचित्र

(ख) गद्य के विकास में सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं की भूमिका

(ग) कहानी और उपन्यास का अंतर

[This question paper contains 3 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 4163 **A**

Unique Paper Code : 62051201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunik Kaal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. किन्हीं **दो** सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (10×2=20)

(क) भूषन-भारु सँभारिहै क्यौं इहिं तन सुकुमार ।

सूधे पाइ न घर परै सोभा हीं के भार ।।

(ख) मैया मैं नहिं माखन खायौ ।

ख्याल परैं ये सखा सबै मिलिं, मेरैं मुख लपटायौ ।

P.T.O.

देखि तुहीं सींकै पर भाजन, ऊँचै धरि लटकायौ।
हौं जु कहत नान्हे कर अपनै मैं कैसे करि पायौ।
मुख दधि पोंछि, बुद्धि इक कीन्ही, देना पीठि दुरायौ।

(ग) जब याद आती है बड़ों के उन सपूतों की कथा,
उनके सखा संगी, विदूषक और दूतों की कथा।
तब निकल पड़ते हैं हृदय से वचन ऐसे दुख भरे-
होवें न ऐसे पुत्र चाहे हो कुल-क्षय है हरे।।

(घ) धर्म का ले-लेकर जो नाम हुआ करती बलि, कर दी बंद।
हमीं ने दिया शांति-संदेश, सुखी होते देकर आनन्द।
विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम।
भिक्षु होकर रहते सम्राट दया दिखलाते घर-घर घूम।।

2. कबीरदास की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

सूरदास की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए।

3. घनानंद के कवित्तों का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

बिहारी की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए।

4. 'रईसों के सपूत' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'हिमालय के आँगन में' कविता का सार लिखिए।

5. 'उनको प्रणाम' कविता की मूल संवेदना लिखिए। (12)

अथवा

'गीतफरोश' की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए।

6. नागार्जुन **अथवा** जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय लिखिए। (7)

(100)

B.A (P) Hindi

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 703 **A**

Unique Paper Code : 52051223

Name of the Paper : Hindi C

Name of the Course : **B.Com.(Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Attempt all questions.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए :

(क) हिन्दी भाषा का निर्माण-काल

P.T.O.

(ख) पूर्वी हिंदी की बोलियाँ

(ग) आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ

(घ) सूफी काव्य का परिचय

(ङ) छायावाद (5×3=15)

2. कबीर की सामाजिक-चेतना स्पष्ट कीजिए

अथवा

सूरदास की साहित्यिक परिचय लिखिए। (10)

3. बिहारी के दोहों का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

घनानंद के काव्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (10)

4. माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्यिक परिचय लिखिए।

अथवा

'रोटी और संसद' कविता में कवि क्या कहना चाहता है ? स्पष्ट कीजिए। (10)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।

अथवा

इंद्रि सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारै नंद-नंदन बिन, और नहीं जगदीस।। (10)

(ख) कनक-कनक तैं सौगुनी, मादकता अधिकाइ।
उहिं खाएं बौराइ इहिं पाएं ही बौराइ।।

अथवा

घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरो आँक नहीं।

तुम कौन धौ पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेह पै देहु छटाँक नहीं।।

(10)

(ग) मुझे तोड़ लेना बनमाली !

उस पथ पर देना तुम फेंक।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,

जिस पथ जावें वीर अनेक।।

अथवा

एक आदमी

रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है,न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है।

(100)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 4563 **A**

Unique Paper Code : 72052803

Name of the Paper : हिंदी भाषा और सम्प्रेषण

Name of the Course : **Ability Enhancement Compulsory Course (AECC)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'भाषिक संप्रेषण एक कला है' - कथन के आलोक में संप्रेक्षण की अवधारणा और महत्व को रेखांकित कीजिए। (15)

अथवा

संप्रेषण के विभिन्न मॉडल कौन से हैं, विस्तार से लिखिए।

2. मौखिक और लिखित संप्रेषण के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उनमें अंतर बताइए। (15)

P.T.O.

अथवा

किन परिस्थितियों में संप्रेषण भ्रामक हो सकता है ? विचार कीजिए ।

3. संप्रेषण के मशीनी माध्यमों का संक्षिप्त परिचय दीजिए । (15)

अथवा

संवाद, संप्रेषण का एक आवश्यक माध्यम है, विवेचन कीजिए ।

4. 'मनुष्य है वही जो मनुष्य के लिए मरे' - उक्ति का पल्लवन कीजिए । (15)

अथवा

विश्लेषण और व्याख्या के अभिप्राय बताते हुए उनके अंतर को स्पष्ट कीजिए ।

5. निम्नलिखित दो पर टिप्पणी लिखिए : (8,7=15)

(क) विल्वर श्रॉम मॉडल

(ख) सामाजिक संप्रेक्षण

(ग) संप्रेक्षण की चुनौतियाँ

(घ) एकालाप

(ङ) वॉयस ओवर